संसार सागर सो उतरे पार

(निहकलंक हरि शब्द भंडार विच्चों)

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

संसार सागर सो उतरे पार, उतर पूरब पच्छिम दक्खण पन्ध रहे ना राईआ। जिस उत्ते किरपा करे आप निरँकार, पुरख अकाला दीन दयाला आपणी दया कमाईआ। मेहरवान होवे धुर दा परवरदिगार, महिबान बीदो बी खैरीआ अल्ला अलाही नूर अलाहीआ। जिस दा खेल सदा जुग चार, सतिजुग त्रेता दवापर कलिजुग आपणा खेल खिलाईआ। सतिगुर शब्द कर त्यार, त्रैगुण अतीता आपणा हुक्म वरताईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करे ख़बरदार, सोया रहण कोई ना पाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता हो के जाहिर, पारब्रह्म प्रभ आपणा वेस वटाईआ। निरगुण सरगुण लए अवतार, जगत जहान वेखे चाईं चाईंआ। नाम कलमा अगम्म उच्चार, शब्द अनादी नाद करे शनवाईआ। साशतर सिमरत वेद पुरानां कर त्यार, अञ्जील कुरानां खुशी बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मालक इक्क अखवाईआ।

संसार सागर दा इक्क मलाह, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक्क अखवाईआ। जिस नूं कहन्दे नूर अलाह, आलमीन वड वडयाईआ। जो जुग जुग बेड़े सभ दे रिहा तरा, तारनहार

अगम्म अथाहीआ। जो अवतार पैगम्बर गुरूआं खेल खलाए विच्च जहां, जगत जुगत आपणी इक्क दृढ़ाईआ। नाम निधाना अगम्म सुणा, धुर पैग़ाम इक्क जणाईआ । सिफ्ती सिफ्त सिफ्त वड्डिआ, सोहले ढोले आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर मालक इक्क अखवाईआ।

संसार सागर पार उतारे आप, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस दा तूं मेरा मैं तेरा जाप, अल्ला हू अन्ना हू आपणा भेव चुकाईआ । मेटणहारा त्रैगुण माया जगत सन्ताप, त्रैभवण धनी आप समझाईआ । जो रूह बुत्त करे पाक, तन वजूद दुरमत मैल रहे ना राईआ। बज़र कपाटी खोल् के ताक, अंदरों परदा दए चुकाईआ। अन्ध अन्धेर मेट के रात, नूरी चन्द करे शनवाईआ। आत्म परमात्म बणा के साक, घर मेला मेले सहज सुभाईआ। जिथ्थे झगड़ा रहे ना ज़ात पात, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा भेव चुकाईआ।

संसार सागर अंदर साचा सुख, आत्म परमात्म मिल के वज्जे वधाईआ। मिले माण वड्डिआई तन वजूद मनुक्ख, तत्तां रंग रंगाईआ । जगत तृष्ना मिटे भुक्ख, माया ममता मोह ना कोई हलकाईआ। उल्टा गरभ ना होवे रुक्ख, चुरासी फासी दए कटाईआ। सुफ़ल करा के जनणी कुक्ख, हरि देवे माण वडयाईआ। तूं मेरा मैं तेरा अन्तर अन्तर गाए इक्को तुक, दूसर अवर ना कोई पढ़ाईआ। आवण जावण पैंडा जाए मुक्क, मेहरवान होए आप सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ।

साचा सुख देवे परवरदिगार, पारब्रह्म अगम्म अथाहीआ। जो आदि जुगादी सभ दा सांझा यार, दूई द्वैती वंड ना कोई वंडाईआ। जिस दा मन्दर काअबा इक्को धर्म दवार, थान थनंतर सोभा पाईआ। दीआ बाती कमलापाती निरगुण जोत कर उजिआर, नूर नुराना डगमगाईआ। जिस उत्ते किरपा करे आप करतार, कुदरत दा कादर वेख विखाईआ। ठग्गाँ चोरां यारां कर जाए पार, मेहरवान सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। भगत सुहेले लए उधार, सूफ़ीआं आपणा रंग रंगाईआ। अमृत आत्म बख्श के ठंडा ठार, निझर झिरना बूंद सवांती आप टपकाईआ। शब्द अनादी दे धुनकार, अनहद नादी नाद करे शनवाईआ। जोती जोत कर उजिआर, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। इक्को मन्दर दस्स सच्चा घर बाहर, गृह इक्को इक्क वखाईआ। जिथ्थे वसे मीत मुरार, मित्र प्यारा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा सुख आप उपजाईआ।

सुख देवे हरि करता गहर गम्भीर, गवर इक्क अखवाईआ। जगत जगयासूआं बख्शे धीर, धीरज धर्म धार दृढ़ाईआ। जो मुकामे हक़ दा हकीकी पीर, दरगाह साची नूर अलाहीआ। जो सति धर्म करे ताअमीर, हक़ हक़ नाल वखाईआ। जदों चाहे जन भगतां बदल देवे तकदीर, तदबीर आपणे हत्थ रखाईआ। लेखा जाणे शाह हकीर, ग़रीब निमाणयां

कोझयां कमलयां गले लगाईआ। धुर दा फ़िकरा सुणाए आप बणाए आपणे फ़कीर, फ़कत आपणा रंग वखाईआ। जिस दी सिफ्त कर के गिआ कबीर, काया काअबे दिसे नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि वड्डा वड वडयाईआ।

साचा सुख आत्म रस, अन्तर आत्म नाम वडयाईआ। जिस नाल मनुआ होवे वस, दह दिशा ना उठ उठ धाहीआ। कूड़ कुड़िआरा पन्ध मुकाए नस्स नस्स, अग्गे वाट ना कोई वखाईआ। सतिगुर शब्द शब्द गुर सतिगुर राह इक्को देवे दस्स, मार्ग पन्थ इक्क समझाईआ। जिथ्थे तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म होवे जस, दूसरी अवर ना कोई पढ़ाईआ। जो वरनां बरनां शतरी ब्राह्मण शूद्र वैश हिंदू मुसलम सिख ईसाई मेले हस्स हस्स, हस्ती इक्को इक्क वखाईआ। जिस दी जगत कहाणी सदा अकथ्थ, रसना कथ सके ना राईआ। जो जुग चौकड़ी चलाए रथ, रथवाही इक्को नज़री आईआ। उह कूड़ कुड़िआरा हरि हिरदिउँ देवे मथ, माया ममता मोह चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ।

साचा सुख काया काअबा, किबल अज जणाईआ। मेल मिलावा दो दोआबा, अमृत जाम आबे हयात आप चखाईआ। जिथ्थे ना कोई पुंन ना सवाबा, इक्को रंगत दए रंगाईआ। हरिजन हरि भगत सूफ़ी रहण ना देवे अलाहिदा, वक्खरी वंढु ना कोई वंडाईआ। घर स्वामी ठाकर अन्तरजामी परवरदिगार सांझा यार दरस विखाए नूर नुराना आप बकाइदा, लाशरीक हक़ तौफ़ीक आपणी आप दृढ़ाईआ। सति सच धर्म धार एकँकार कराए मवाइदा, शहादत सतिगुर शब्द शब्द भुगताईआ। जिस दे हुक्म विच्च जगत जहान होया पैदा, ओसे दे हुक्म विच्च चल्लणा चाईं चाईंआ। धुर दे नाम नाल हकीकी कलमे नाल जीवण ज़िंदगी वाला फायदा, नुकसान विच्च कदे ना आईआ। आदि अन्त जुग चौकड़ी लोक परलोक चौदां तबक जो इक्को मालक ख़ालक हैगा, इक्को बैठा सोभा पाईआ। साची बन्दगी डर ओसे दे भय दा, हिरदे अंदर सद रखाईआ। उह धुर दा राम धुर दा काहन पुरख अकाला दर्शन ज़रूर दएगा, देवणहार वड वडयाईआ। काया मन्दर अंदर अनाद धुन शब्द अगम्मी कहेगा, बिन रसना जेहवा ढोला आप सुणाईआ। जिस दे प्यार दा वहण मुहब्बत विच्च वहेगा, कूड़ी क्रिया दए रुढ़ाईआ। साचा सुख उह सच स्वामी सदा दएगा, जो ओसे दी ओट रखाईआ। तन अंदरों बुरज़ हँकारी ढहेगा, ममता कूड़ मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, साचा हुक्म संदेशा इक्को कहेगा।

सुख लैणा चाहो जे सारे जगयासूओ जग, जग जीवण दाता इक्क मनाईआ। जो शहनशाह सूरा सर्बग, कुदरत कादरे करीम नूर अलाहीआ। जिस नूं कहन्दे सारे रब्ब, रब्बे आलमीन आप अखवाईआ । जो झिरना झिराए कँवल नभ, अमृत धार वहाईआ। शब्द सुणाए धुर दा नद, अनादी धुन करे शनवाईआ। जन भगतां सूफ़ीआं दर्शन देवे उप्पर

शाह रग, नव दवार दा डेरा ढाहीआ। फड़ फड़ हँस बणाए कग, सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगाईआ। त्रैगुण माया बुझाए अग्ग, अमृत मेघ नाम बरसाईआ। कूड़ कुड़िआरी मेट के हद्द, हदूद इक्को दए वखाईआ। जिथ्थे हिंदू मुसलम सिख ईसाई इक्ठे होणे सभ, सचखण्ड साचा दरगाह साची मुकामे हक्क इक्क समझाईआ। तिस साहिब स्वामी अन्तरजामी नूं सारे लउ लभ्भ, दर्शन सनमुख हो के पाईआ। जिस दी इक्को मंज़ल इक्को पद, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ।

साचा सुख काया गागर, बाहर हत्थ किछ ना आईआ। जिस तरना समुंद सागर, सिमरो इक्को बेपरवाहीआ। जिस दा नाम रतन रतनागर, रत्ती रत आपणे रंग रंगाईआ। उह कुदरत दा कादर करीम सभ नूं देवे आदर, सिर सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। जे जगत जंजाल कटाउणे बणो बहादर, सूरबीर लउ अंगढ़ाईआ। आपणा कर्म करो उजागर, दुरमत मैल धवाईआ। उह परम पुरख परमात्म काया मन्दर अंदर सभ दे हाज़र, हज़ूर बैठा सोभा पाईआ। इक्को नाम जपो वाज़ब, दूसर लोड़ रहे ना राईआ। ओस दा कलमा समझे कोई ना कातब, अकल बुद्धि चले ना कोई चतुराईआ। जो निरगुण धार निरगुण करे मुखातब, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा रंग रंगाईआ। उह सदा सदा करनहार सखावत, रहमत नाम कलमे वाली वरताईआ । दुनियांदारो कूड़ी छड्ड देणी बगावत, झगड़ा तन ना कोई रखाईआ। सुख देण नूं इक्को नाम नयामत, नर निरँकार दित्ती बणाईआ। जिस दी किसे नूं नहीं ममानत, हिंदू मुसलम सिख ईसाई सारे लउ चाईं चाईंआ। सृष्टी विच्चों पार लंघाउण वाला इक्को सही सलामत, साहिब सतिगुर इक्क अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा संग बणाईआ।

संसार सागर विच्चों जिस आपणा पार कराउणा, दरगाह साची जाणा चाईं चाईंआ। इक्को इक्क दा इष्ट मनाउणा, सीस जगदीश इक्क मनाईआ। इक्को दा ढोला गीत गाउणा, इक्को कलमा कायनात जणाईआ। इक्को इक्क दा दर्शन पाउणा, जो नूर नुराना जोती जाता नूर अलाहीआ। जिस सभ दा लहणा देणा आपणे हत्थ रखाउणा, अवतार पैगम्बर गुर जिस दी सिफ्त सलाहीआ। सो स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी परवरदिगार सभ दा यार जुग जुग जिस ने लहणा देणा मात चुकाउणा, उधार दीन दुनी ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा सुख इक्क समझाईआ।

साचा सुख देवे बहुभांती, हरि करता वड वडयाईआ। जो मेटणहारा अन्धेरी राती, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। अमृत दे के बूंद सवांती, सांतक सति दए कराईआ। दिने जागदिआं रातीं सुत्तयां पुच्छे वाती, मालक धुरदरगाहीआ। जिस नूं कहन्दे कमलापाती, पतिपरमेश्वर नूर अलाहीआ। जो बदल देवे हयाती, इलम सफाती आप समझाईआ। जिस दी मंज़ल इक्को घाटी, घाटे पूरे दए कराईआ। जन्म जन्म दी कट्ट के वाटी, अगला पन्ध रहे ना राईआ। परमात्म हो के आत्म बणे साथी, सगला संग निभाईआ। उह किरपा करे पुरख

समराथी, समरथ आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा घाट विखाईआ।

संसार सागर दा इक्को नाम दा बेड़ा, नईआ नौका जगत जणाईआ। कूड़ी क्रिया छड्डणा झेड़ा, झगढ़ा जगत ना कोई बणाईआ। आपणा गृह वेखणा खेड़ा, काया मन्दर खोज खुजाईआ। उस दा खुल्ला करना वहड़ा, ममता वंढु ना कोई वंडाईआ। घर स्वामी वेखणा नेड़ा, गृह बैठा डेरा लाईआ। जिस दा खेल गुरू गुर चेरा, चेला गुर आप हो जाईआ। उह ज़रूर संसार विच्च करे मेहरा, कायनात विच्चों पार कराईआ। जगत विकार मेटे अन्धेरा, सति सच करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा सुख सुख सतिगुर चरन चरन समझाईआ।

(७ चेत श सं १० टाटा नगर)

धरनी कहे दुनियांदारो जगत जीवण जीओ इन्सानी, तन वज़ूद माटी खाक अंदर रखाईआ। कूड़ी क्रिया मन कल्पना ममता मोह कढ्ढो बेईमानी, प्यार मुहब्बत विच्च सति सति सरूप समाईआ। वस्त अमोलक हक़ प्रीती बणो दानी, जीव जहान नौजवान मर्द मरदान हो के दिउ वरताईआ। अन्तर आत्म परमात्म आपणी मंज़ल तक्को रुहानी, रूहेरवां आपणा रंग रंगाईआ। दीन दुनी दा झगड़ा छड्डो पुरानी, पूरब लेखा रहे ना राईआ। नवें जुग दी नवीं चढ्ढो जवानी, जोवनवन्ते हो के लउ अंगढ़ाईआ। सति सच दी बणा कमान ते तीर अणयाला मारो निशानी, निशाने जगत जुगत बदलाईआ। उह लेखा लहणा पूरा कर लउ जो इशारा दित्ता दुर्गा आदि शक्त भवानी, अष्टभुज सिँघ शेर शेर गई समझाईआ। जिस दी धार विच्च बावन दस्सी अगम्मी कहाणी, बल बल गिआ जणाईआ। राम ने हत्थ धर के मस्तक उत्ते पेशानी, पेशतर परदा दित्ता खुल्लाईआ। काहन हो के जाण जाणी, घनईआ सईआ भेव रिहा खुल्लाईआ। मूसा जलवा तक्क अगम्म नुरानी, कोहतूर संग रलाईआ। ईसा दीन दुनी समझ के फानी, गल सलीब लई लटकाईआ। मुहम्मद चार यारी नाल भेव खोल्ल कुरानी, काया काअबा इक्क दृढ़ाईआ। नानक निरगुण धार कर मेहरवानी, सरगुण सच सच समझाईआ। गोबिन्द अमृत धार बख्श के ठंडा पाणी, अगनी तत्त तत्त बुझाईआ। मानव जाती इक्को रंग इक्को गृह लैणा पहचानी, दूजा दर नज़र कोई ना आईआ। लेखा मुक्के चार जुग दी अंडज़ जेरज उत्भुज सेतज चारे खाणी, खाना इक्को इक्क वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा परदा आप खुल्लाईआ।

धरनी कहे जगिआसूओ मेरे उत्ते जीओ सच दा धरम, धरनी धरत धवल धौल हो के दिआं दृढ़ाईआ। तुसीं निरगुण धार प्रभू दा वरन, पारब्रह्म मिल के वज्जे वधाईआ।

पिछला कूड़ा बदलो आपणा कर्म, करनी दा करता रंग रंगाईआ। जे तुहाढ़ा जनणी दी कुखों होया जरम, माण दिउ जणेंदी माईआ। तुहाढ़ी दृष्टी रहे ना चरम, चम्म दृष्टी लउ बदलाईआ। प्रभू दे प्यार दा रहे कोई ना भरम, भाण्डा भरम भओ लैणा भन्नाईआ। झगड़ा रक्खो ना वरन बरन, ज़ात पात ना वंड वंडाईआ। इक्को पुरख अकाले रक्खो सरन, सरनगत इक्क जणाईआ। जो निझ नेत्र खोल्हे हरन फरन, लोइण आपणा आप वखाईआ। जगत अंगिआर कूड़ी क्रिया विच्च मूल ना सड़न, तत्तव तत्त ना कोई तपाईआ। सति सच दी इक्को विद्या सारे पढ़न, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। शरअ शरीअत विच्च मूल ना लड़न, नाम कलमा कातल मकतूल ना रूप वखाईआ। मंज़ल हकीकी सचखण्ड दवारे साचे चढ़न, पान्धी बणो थाउँ थाईंआ। हर हिरदे प्रभू दा भय होवे डरन, मन हंगता दूर कराईआ। लेखा वेखो चोटी जड़न, जड़ चेतन्न खोज खुजाईआ। लहणा तको सीस धड़न, हड्ड मास नाड़ी मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ।

धरनी कहे सच्चा मार्ग इक्क अपार, अपरंपर स्वामी दए समझाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर करो विचार, विचरन दी लोड़ रहे ना राईआ। सच मुहब्बत मानव मानव वेखो विच्च संसार, संसारी भण्डारी सँघारी वेख खुशी बणाईआ। अन्तर आत्म आत्म बणो मित्र यार, यारड़ा सेज सर्ब हंढाईआ। आपणी मनसा बणाओ बरखुरदार, सेवक हो के सेव कमाईआ। तन वज़ूद अंदर रहे ना कोई विभचार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना कोई हलकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप समझाईआ।

धरनी कहे मानव जाति इक्को बणो कबीला, कामल मुशर्द ध्यान लगाईआ। सच प्यार बणाओ वसीला, वसलेयार इक्क रखाईआ। आपणीआं आपणीआं बदलो दलीलां, मन बुद्धि चले ना कोई चतुराईआ। परम पुरख परमात्म इक्को धार सभ दा होए वसीला, वसल यार इक्क रखाईआ। आपणीआं आपणीआं बदलो कूड़ कुकर्म दीआं लीकां, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ।

मानव जाति इक्को धार बणो मनुख, मानव आपणे रंग रंगाईआ । दुनीदार हो के दिउ किसे ना दुःख, ददी हो के दर्द लैणा वंडाईआ । सभ नाल सांझी करो आपणी भुक्ख, जगत माया ना कोई हलकाईआ । आत्म परमात्म माणो साचा सुख, जगत दर्द ना लागे राईआ। सुफल कराओ जनणी कुँख, धन्न होए जणेंदी माईआ। प्रभू प्यार दा मार्ग प्रेमीआं कोलों लउ पुछ, मुहब्बत मुहब्बत विच्चों प्रगटाईआ। जगत वासना कीमत समझो तुछ, कल्पना कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक धुरदरगाहीआ।

धरनी कहे जगिआसूओ आपणी वेखो ज़ात, अजाति डेरा ढाहीआ। आपणा

रूप तक्को पारज़ात, पारब्रह्म मिल के वज्जे वधाईआ । कलिजुग वेखो अन्धेरी रात, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। मन कल्पना छड्डो कमज़ात, कुलखणी संग ना कोई रखाईआ। मानव मानव मानस इक्क दूजे नाल प्यार दा जोड़ो नात, रिस्ता जग ना कोई वडयाईआ। इक्को सृष्टी दृष्टी अंदर वेखो कायनात, नव सत आपणा ध्यान लगाईआ। प्रेम प्यार दी सभ नाल करो बात, बातन आपणा रंग वखाईआ। बिनां नेत्रां तों आपणे अंदर मारो झात, बिन अक्खीआं अक्ख उठाईआ। आपणा गृह वेखो परांत, हिसा साढे तिन्न हत्थ रंग रंगाईआ। जिस विच्च बैठा इक्क इकांत, इक्क इकल्ला धुर दा माहीआ। जो देवणहारा अमृत बूंद सवांत, अगनी तत्त तत्त बुझाईआ । जिस दा लेखा सदा बहु बिध भांत, भेव अभेदा आप खुल्ाईआ। इक्क दूजे दी प्यार मुहब्बत विच्च पुच्छो वात, वारस हो के ध्यान लगाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक नूर अलाहीआ।

दीन दुनियां दी नवीं बणाओ बणत, मानस मानव मानुख आपणा प्रेम बणाईआ। सभ दा इक्को सांझा होवे कन्त, कन्तूहल इक्को नज़री आईआ। आपणा अन्तर आत्म बणाओ सन्त, सतिगुर सिख्या विच्च समाईआ। गढ़ तोड़ो हउमे हंगत, हँ ब्रह्म परदा लैणा उठाईआ। सच विद्या बणो पंडत, जगत अक्खरां लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक्क गुसाईंआ।

धरनी कहे नवें जुग दी बणाओ रीती, रीतीवान आप अखवाईआ। सारे अंदरों बदलो आपणी नीती, नीतीवान दए वडयाईआ। हिंदू मुस्लिम सिख ईसाई सारे करो प्रीती, प्रीतम इक्को सभ दा धुर दा माहीआ। पिछली कहाणी पिच्छे गई बीती, अगला मार्ग इक्को सोभा पाईआ। झगड़ा छड्डो हसष्त कीटी, ऊँच नीच नज़र कोई ना आईआ। तन वज़ूद चाढ़ो रंग मजीठी, दो जहान उतर कदे ना जाईआ। अगली खेल करो अनडीठी, जग नेत्र वेखण कोई ना पाईआ। रसना बोली करो मीठी, क्रिया कूड़ ना कोई हलकाईआ। त्रैगुण तपो ना मूल अंगीठी, रजो तमो सतो ना कोई लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा राह इक्क दरसाईआ।

धरनी कहे जगयासूओ दीन दुनी दा बदलो राह, रहबर इक्को वेख वखाईआ। जो अन्तर आत्म सभ दा बणे मलाह, खेवट खेटा बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। जिस दे अग्गे सारे करन दुआ, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। उह मालक खालक नूर अलाह, नूर नुराना अगम्म अथाहीआ। जो पूरब लहणे देणे सभ दे दए चुका, लेखा रहण कोई ना पाईआ। दीन मज़हब दे झगड़े दिउ गवा, गवाह सतिगुर शब्द बणाईआ। प्रभू दा इक्को नाम कलमा लउ धिआ, धर्म दी धार इक्क रखाईआ। जगत नेत्रां गवाओ ना मूल हया, लोचन नैण नैण बिगसाईआ। हँस बुद्धि ना बणाओ कां, काग वांग ना कोई कुरलाईआ। मानस जाती मुहब्बत विच्च कोई ना खाओ सूर गाँ, पशूआं वंड ना कोई वंडाईआ। पुरख अकाला सभ दी इक्को मां, दूजी दिसे ना कोई जणेंदी माईआ। सचखण्ड दवार इक्को सभ दा थां,

थनंतर साचे वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक्क गुसाईंआ।

नवें जुग दा रस्ता बड़ा अज़ीब, अज़ब निराला नज़री आईआ । जिस नूं मन्नण गरीब अमीर, वड्डा छोटा रहण कोई ना पाईआ। जिस विच्च दीनां मज़हबां मिलणी तरतीब, तरीका प्रभ आपणे हत्थ रखवाईआ। जिस विच्च आसा मनसा पूरी होए उम्मीद, तृष्ना जगत रहे ना राईआ। मानस मानस इक्क दूजे नूं सिधे रक्खो दीद, नेत्र लोचन नैण अक्ख ना कोई बदलाईआ। दीन मज़हब दी शरअ विच्च होए ना कोई शहीद, कातल मकतूल रूप ना कोई बणाईआ। गफ्लत विच्चों आपणी खुल्ले नींद, सोई आपणी सुरती लउ जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मार्ग इक्क वडयाईआ।

सच दा मार्ग वेखो सस्ता, कीमत जगत ना कोई जणाईआ। प्रभू प्यार दा लभ्भो रस्ता, रहबर तक्को नूर अलाहीआ। जेहड़ा आदि जुगादी हर घट अंदर वसदा, बाहर खोजण दी लोड़ रहे ना राईआ। जो अमृत भंडारा देवे अगम्मे रस दा, बिन रसना जिह्वा दए चखवाईआ। जिस दा खेल अलक्खणा अलक्ख दा, अलक्ख अगोचर आपणी कार कमाईआ। उह मार्ग निराला एकँकारा हो के दस्सदा, दह दिशा दा पन्ध मुकाईआ। तीर अणयाला दो जहानां आपणा कसदा, बिन चिले कमान खिचाईआ। जिस दे प्यार विच्च जुग चौकड़ी फिरे नस्सदा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग भज्जे वाहो दाहीआ। उह जुग जुग जन भगतां पैज रक्खदा, सिर सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। जगयासूओ हुण अग्गे वेला नहीं रहणा वक्ख वक्ख दा, वक्खरी वंड ना कोई वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा परदा आप चुकाईआ।

धरनी कहे मेरे उत्ते वसणवाली सुणो मनुख जाति, मानुखता वालयो दिआं दृढ़ाईआ। इक्क संदेशा सुणो बिना अक्खरां वाली पाती, जिस पतरका दा लेख ना कोई जणाईआ। नाल तक्को कलिजुग अन्धेरा राती, अन्ध अन्धेरा ना कोई गवाईआ। तुसीं सारे जन्म लिआ लोकमाती, मानस आपणा रूप बदलाईआ। तुहाढ्ढा दीन मज़हब वक्ख वक्ख भांती, बहु भांती वंढु ना कोई वंढ्ढाईआ। तुहाढ्ढा आत्म इक्क इकांती, इक्क इकल्ला नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ।

दुनियां जपे प्रभू दा नाम, नाम निधाना इक्क अखवाईआ। जिस विच्च मेला होए रमईआ राम, काहन काहना मिल के वज्जे वधाईआ । जलवा दिसे अगम्म अमाम, नूर नुराना मिले नूर अलाहीआ। जिस विच्च उपजे सतिनाम, सति सति विच्च समाईआ। जिस दी धार फतह डंक दो जहान, जगत हिसे वंड ना कोई वंडाईआ। उस मार्ग नूं लउ पहचाण, जिस मार्ग नूं सके ना कोई बदलाईआ। उस दे उत्ते चलो नाल अराम, जगत

औकड़ वेखण कोई ना पाईआ। फेर निगाह मारो आपणे काया अंदर मकान, खेड़ा साढ़े तिन्न हत्थ फोल फुलाईआ। जिस विच्च निरगुण धार करे बिसराम, जोती जाता आसण लाईआ। ओसे दा मार्ग इक्क असान, जो मुशकल सारी हल्ल कराईआ। जिस दा चार जुग दे शास्त्र देण बिआन, कलमे कायनात दृढ़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सारे बोलो बिना ज़बान, रसना रस ना कोई चखाईआ। झगढ़ा होवे ना किसे कलाम, कायनात वंड ना कोई वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी जो करनेहारा इंतज़ाम, बन्दोबस्त उत्ते असत जुग चौकड़ी आपणे हत्थ रखाईआ।
(२१ कत्तक शहनशाही सम्मत ११ बगीचा सिँघ)